

## संस्कार.... अपने आप में एक बड़ी शक्ति...!

हम सुनते आये हैं, धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो थोड़ा बहुत गया, किंतु चरित्र गया तो सबकुछ गया। हमने देखा, वर्तमान समय में वो लोग भयभीत हो गये जिनका स्वयं पर विश्वास नहीं था। अब समय आ रहा है चेंज से चरित्र बनाने का। चरित्र अर्थात् अपने में दैवी संस्कार की पूंजी निर्मित करना। संस्कार अपने आप में एक शक्ति है। वो मनुष्य को सुरक्षा प्रदान करती है। हमने देखा, परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा को उनके दैवी संस्कारों की याद दिलाई और उनके संस्कार इमर्ज हो गये। फिर



राजयोगी ब.क. गंगाधर

भले ही कितनी भी कठिनाइयां, समस्याएं उनके सामने आईं, फिर भी अपने डिवाइन संस्कार की शक्ति के कारण वे अपने मनोरथ सिद्ध करने में सफल रहे। नूतन वर्ष में नया आयाम और नये ढंग से अपने को चेंज करना होगा, अन्यथा तो बीते हुए वर्ष की तरह ही हम हैप्पी दीपावली आदि विश करके अपना मुख मीठा कर, मिया मिट्टू बनकर ही रह जायेंगे। हम जो भी भविष्य में श्रेष्ठता की कामना करते हैं उस कार्य में बाधक हमारे पुराने संस्कार ही तो हैं। सबकुछ होते हुए भी इतिहास गवाह है कि जिसका चरित्र-बल निर्बल था, उसकी हमेशा ही हार हुई है। अगर रामायण का संदर्भ भी देखें, जब श्रीराम और रावण का भयंकर युद्ध हुआ, आखिर में रावण गिर पड़ा। उसी वक्त राम ने लक्ष्मण को कहा कि आप रावण के पास जाएं और उनसे सीखें। परंतु उस वक्त लक्ष्मण के मन में बहुत उमंग था कि रावण की हार हुई और उनका मन राम की बात स्वीकार करने की स्थिति में नहीं था। फिर भी श्रीराम की आज्ञा मानकर वे रावण के पास गये। तब धरती पर पड़े रावण ने लक्ष्मण से कहा, मेरे पास सबल शस्त्र-सेना थी, मेरे राज्य में ही हम युद्ध लड़ रहे थे और सबको ये विश्वास भी था कि लंका नरेश की कभी हार नहीं हो सकती। वहाँ की प्रजा तो क्या, देवतायें भी मुझसे कांपते थे। फिर भी मेरी हार क्यों हुई? क्योंकि मेरा चरित्र ठीक नहीं था। चरित्र अर्थात् श्रेष्ठ संस्कार की शक्ति मेरे पास नहीं थी। इसीलिए मेरी हार हुई। श्रीराम के पास चरित्र का बल था। तो कहने का भाव यह है कि संस्कार अपने आप में एक शक्ति है जो विपरीत परिस्थितियों में भी हमें एक संबल देती रहती है। हमने यहाँ संस्थान में देखा कि जब ज्ञान का विस्तार हुआ तो हमारे ब्रह्मा बाबा के साथ जो भी वरिष्ठ जुड़े, उन्होंने अपने संस्कारों को इतनी दिव्य शक्तियों से भर दिया, कि फलस्वरूप वे जहाँ कहीं भी जाते, बिल्कुल निर्भय होकर सत्य ज्ञान बिना झिझक, बड़े ही नशे से, बड़ी ही शालीनता से देते। क्योंकि दुनिया वालों के लिए ये नवीन ज्ञान था। जिन मान्यताओं के साथ दुनिया चल रही है उससे भिन्न था।

ऐसे ही हम अगर इतिहास में जायें तो श्रीकृष्ण, श्रीराम से आगे चलते हुए गौतम बुद्ध की बात यहाँ बताना उचित होगा। एक बार गौतम बुद्ध जंगल में जा रहे थे। रास्ते में एक छोटा-सा गांव आया। गांव में सत्राटा था। कोई भी घर से बाहर नहीं निकल रहा था। उन्होंने एक सज्जन से बात की। सज्जन से बात करने पर पता चला कि वहाँ पास के जंगल में रहते एक बड़े अंगुलीमाल डाकू का भय चारों ओर फैला हुआ था। वहाँ का राजा भी इस अंगुलीमाल से बहुत भयभीत था। वो भी उसके सामने हिम्मत नहीं करता था। क्योंकि वो अंगुलीमाल डाकू, लोगों की छोटी अंगुली काटकर, उसकी माला बनाकर अपने गले में पहनता था। अब तक उसने 999 अंगुलियां काटकर गले में डाली थी और उसका लक्ष्य 1000 अंगुलियों की माला पहनने का था। ये बात सुनकर बुद्ध ने कहा, आप सब अंदर में रहो, मैं जंगल में जाता हूँ। बुद्ध जंगल की ओर अकेले आगे चलने लगे। उन्हें मालूम था कि जंगल में डाकू छिपा हुआ है, फिर भी वे अपनी तेज रफ्तार से आगे चलते गये। अंगुलीमाल ने आगे चलते हुए बुद्ध को देखा और वो उनको पकड़ने के लिए उनके पीछे-पीछे चलने लगा। लेकिन बुद्ध बहुत रफ्तार से आगे चल रहे थे और उसकी पकड़ में नहीं आ रहे थे। ऐसे में अंगुलीमाल ने आवाज़ दिया, रुक जाओ। बुद्ध रुके और पीछे मुड़कर बड़े शांति से कहा, मैं तो कई वर्षों पहले ही रुक गया, तुम कब रुकोगे! मैं वर्षों पहले दूसरों को दुःख देने से रुक गया हूँ, अब तुम्हें भी रुकना है इससे। अंगुलीमाल ने देखा, ये पहला व्यक्ति है जो बड़ी शांति से, निर्भय होकर मुझसे ये कह रहा है। ये बात उसके मन को छू गई और वो परिवर्तित हो गया। ये कौन-सी शक्ति थी? ये संस्कार की ही शक्ति थी ना! दिव्य संस्कार में ही ये पाँवर है जो दूसरों को भी भीतर से परिवर्तित कर सकती है। तो हमने यहाँ पहले-पहले अपने स्वमान से संस्कार को परिवर्तित करना सीखा और बाबा हमेशा कहते हैं, आप जो हैं, जो आपकी शक्ति है उसको जानो, पहचानो, समझो क्योंकि जो आप हैं वही आप दूसरों को दे पायेंगे और उनका परिवर्तन कर सकेंगे। संस्कार से ही संसार परिवर्तन होता है। तो हमें पहले स्वयं के संस्कार को परिवर्तित करना होगा, अर्थात् अपने व्यक्तित्व, चरित्र को चेंज करना होगा। और उस चेंज से ही बदलाव आयेगा।

## बचत का खाता कैसे बढ़ाएं

बाबा ने विश्व कल्याण की सेवा की जिम्मेवारी का ताज आप सबको दिया है। जब से ब्रह्माकुमारी बनी तब से मेरे ऊपर डायरेक्ट बाबा ने यह ताज रखा है, निमित्त टीचर बनाया है।

मौन रखना सबसे अच्छा है। इसके कई फायदे हैं। मौन में मन्सा सेवा करेंगे तो आपका समय बच जायेगा। शुरू में मौन भट्टी के अंतर्गत ही यह सूक्ष्मवतन का राज खुला था। तो मौन में रहने से जो टाइम बचेगा उसमें मन्सा सेवा करनी है। योग करना, इसी से सब बचत हो जायेगी। लोग तो स्थूल धन बचाते हैं, लेकिन हमारा मुख्य योग का आधार संकल्प शक्ति ही

जो यह दिमागी एनर्जी है, वह भी हमारा एक खजाना है। दिमाग की इस एनर्जी को भी अगर हम ऐसे ही गंवा देते हैं तो हमारे शरीर पर उसका असर आता है। जो ज्यादा बोलते हैं और जो ज्यादा दिमाग चलाते हैं उनका दिल और दिमाग कमजोर होता है क्योंकि वह एनर्जी गंवा देते हैं। इससे फिर योग भी नहीं लगेगा, मूड भी ऑफ कर बैठेंगे। तो दिमाग की एनर्जी भी हमारा खजाना है। वह हमको कभी नहीं गंवानी चाहिए।

कईयों को योग का अनुभव कम है। भल कहते हैं हम योगी हैं। तो दिमाग की एनर्जी फालतू बातों में और छोटी-सी बात को बड़ा करने में वेस्ट होती है। वह किसी बात से



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

**ज्ञान तो सुन लिया लेकिन जब तक उस ज्ञान को मनन नहीं करेंगे तब तक अपना नहीं बनेगा। बाबा ने जो ज्ञान का खजाना दिया है उस खजाने को मनन शक्ति से ही अपना बना सकते हैं।**

है। संकल्प शक्ति के आधार पर ही हमारा योग लग सकता है। और मन साफ होगा तो ज्ञान का मनन हो सकेगा। मन से ही तो मनन करेंगे ना! ज्ञान तो सुन लिया लेकिन जब तक उस ज्ञान को मनन नहीं करेंगे तब तक अपना नहीं बनेगा। बाबा ने जो ज्ञान का खजाना दिया है उस खजाने को मनन शक्ति से ही अपना बना सकते हैं। समय भी हमारा सबसे बड़ा खजाना है। समय भी हमारा सफल किस आधार से हो सकता है, जब हमारा मन ठीक होगा और मन ठीक होगा तो बुद्धि भी ठीक करेंगे। तो सारा आधार हमारा संकल्प शक्ति पर है।

सन्तुष्ट नहीं होंगे क्योंकि दिमाग की एनर्जी कमजोर है इसलिए कोई बात दिमाग में आयेगी ही नहीं। तो कभी भी अपने दिमाग की एनर्जी वेस्ट नहीं करो। वेस्ट होती है व्यर्थ बातों से, छोटी-सी बात को बड़ा करने से। बड़ी को छोटा करना सीखो, छोटी बात को बड़ा नहीं करो तो एनर्जी जमा होगी। अगर एनर्जी वेस्ट जाती है तो न ज्ञान बुद्धि में आयेगा, न मनन शक्ति होगी, न योग लगेगा। और योग नहीं लगेगा तो ब्राह्मण जीवन का सुख नहीं ले सकेंगे इसलिए इसकी बहुत सम्भाल रखना, जरा भी व्यर्थ बात बुद्धि में टच नहीं हो जाए।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

## सम्पन्नता और सम्पूर्णता का अनुभव

मैं अपने आपसे पूछती हूँ मेरा फुल कनेक्शन एक बाबा के साथ है? बाबा मेरी से सदा सन्तुष्ट है? बाबा के पास मेरी कोई कम्प्लेन तो नहीं है? मेरे में कोई अणु जितना दाग तो नहीं है?

मैं अपने आपसे पूछती हूँ मेरा फुल कनेक्शन एक बाबा के साथ है? बाबा मेरी से सदा सन्तुष्ट है? बाबा के पास मेरी कोई कम्प्लेन तो नहीं है? मेरे में कोई अणु जितना दाग तो नहीं है? मैं अपने आपसे पूछती हूँ मेरा फुल कनेक्शन एक बाबा के साथ है? बाबा मेरी से सदा सन्तुष्ट है? बाबा के पास मेरी कोई कम्प्लेन तो नहीं है? मेरे में कोई अणु जितना दाग तो नहीं है? मैं अपने आपसे पूछती हूँ मेरा फुल कनेक्शन एक बाबा के साथ है? बाबा मेरी से सदा सन्तुष्ट है? बाबा के पास मेरी कोई कम्प्लेन तो नहीं है? मेरे में कोई अणु जितना दाग तो नहीं है?

मैं अपने आपसे पूछती हूँ मेरा फुल कनेक्शन एक बाबा के साथ है? बाबा मेरी से सदा सन्तुष्ट है? बाबा के पास मेरी कोई कम्प्लेन तो नहीं है? मेरे में कोई अणु जितना दाग तो नहीं है?

यह मिनट, दिन बीता, रात सोये, सवेरे उठे, तो यह मेरे सेकण्ड, मिनट, घंटे कितना कमाई में जमा हुए? रोज मैं यह चेक करती हूँ। बाबा हमें रोज यह स्लोगन देता कि बच्ची तेरे भाने सर्व का भला, तेरी चढ़ती कला माना सर्व का भला। तो मैं हमेशा सोचती कि मेरा एक एक सेकण्ड कमाई में बीते, ऐसे नहीं अलबेले होकर रात को सोया, दिन में खया, हँसा-बहला, दिन-रात पूरा हुआ। हमें तो आता कि यह संगम के थोड़े दिन कितने न महान हैं! यह गिनती के दिन हैं, यह कितने वैल्युबल दिन हैं! ऐसा सोचकर अन्दर ही अन्दर सम्पन्न बनने की मेहनत करती हूँ, लक्ष्य रहता है मुझे तो बाप समान कर्मातीत बनना ही है।

मुझे बाप समान बनना है तो अब बनना है। फुल त्याग, फुल तपस्या, फुल सेवा मुझे अभी करनी है। मेरी फुल लगन बाबा के साथ अब होनी चाहिए। दूसरा मैं सर्वशक्तिवान बाप की बच्ची हूँ तो मेरे में सर्वशक्तियां होनी चाहिए, फुलफोर्स होना चाहिए। मैं अपने अन्दर यह सोचती हूँ और सोचते-सोचते बाबा के अन्त में चली जाती हूँ।

मैं यह भी देखती हूँ कि सर्व के लिए मेरे अन्दर शुभ भावना है? मैं ऊपर में जाकर देखती हूँ कि मेरी वृत्ति साफ-पवित्र और सुन्दर है? फिर भी अगर मेरे से कोई सन्तुष्ट नहीं तो वह उसकी बात है। बाकी शुभ भावना, सच्चाई का आज नहीं तो कल रिकार्ड बजेगा। किसी की स्थिति से मैं अपना रिकार्ड क्यों खराब करूँ! मैं ऊपर चोटी की स्थिति में स्थित रहती हूँ, यह बाबा की बहुत बड़ी गृहस्थी है, हम पार्ट बजा रहे हैं। मैं गृहस्थी नहीं हूँ। मेरा बाबा चोटी पर है तो मैं नीचे क्यों आऊँ।

बाबा ने हमें सेकण्ड में संकल्पों को स्टॉप करने की शक्ति दी है। बीच-बीच में मैं अपने संकल्पों को स्टॉप कर लेती हूँ। मैं कभी अपने समय व शक्ति को वेस्ट नहीं करती हूँ।

## बाह्यमुखता से हटकर अन्तर्मुखता में आयें



राजयोगिनी दादी जानकी जी

अपने को आत्मा समझना और एक को याद करना - बाबा बार-बार यही पाठ पक्का कराता है। क्योंकि आत्मा समझने से देह अभिमान छूटेगा और बाबा को याद करने से पाप कटेंगे। यह बात सारे दिन में न भूलें। बाबा कहता है मैं घड़ी-घड़ी याद दिलाता हूँ क्योंकि बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं।

ऐसे तो मरने पर भी आत्मा शान्त चित्त नहीं हो सकती है, तो जीते जी कैसे हो सकती है? शान्ति कोई सहज बात है क्या! पर बाहर की बातों से प्री हो करके जब डीप जाओ, अन्दर ही अन्दर चले जाओ तो जो मरने से भी शांत नहीं होते थे, वो जीते जी शान्त हो जाते हैं। आत्मा अपने

निजी स्वरूप को जान करके उसमें अन्दर तक जब तक न जाये तब तक बाहर नहीं आना। जल्दी-जल्दी जम्म लगाके बाहर आते हैं, अरे, अन्दर तो चले जाओ ना, डुबकी लगाओ तो सही। जिसको स्विमिंग करना नहीं आता, उसे डर लगता है कि डूब

**जिसको स्विमिंग करना नहीं आता, उसे डर लगता है कि डूब न जाऊं तो इसमें भी सब बातों को छोड़ना पड़ेगा, भूलना पड़ेगा, किसको बुद्धि से अर्वायड करके अन्तर्मुखी रहना पड़ेगा...**

न जाऊं तो इसमें भी सब बातों को छोड़ना पड़ेगा, भूलना पड़ेगा, किसको बुद्धि से अर्वायड करके अन्तर्मुखी रहना पड़ेगा क्योंकि बाह्यमुखता ऐसा खींचती है, बात मत पूछो।

हरेक अपने दिल से पूछे हम ऐसे अन्तर्मुखी बनें हैं, जो अन्तर्मुखी सदा सुखी का अनुभव होता रहे। तो अन्तर्मुखी वो बनेगा जो अपने अन्दर से बाप की बातें सुनता है, मुख के अन्दर है, पर बोलता नहीं है मुख। सुनता है

अपने को देखने के लिए। तो बाह्यमुखता की आदत से छूटने के लिए अन्दर की आँख से अन्तर्मुखी बनना पड़ेगा। अन्दर भी बाहर की बातें सोचने की आदत है, हरेक दिल से पूछे सारा दिन क्या करते हैं? स्वप्नों में क्या करते हैं? अन्दर संकल्प में शान्ति

बदला लेने का ख्याल आ नहीं सकता। मानो मैं उदास हुई तो पहले ख्याल आया ना! बाहर से करके मुस्कुराये, पर अन्दर से देखते हैं तो लगता है कि इसके अन्दर कुछ है। बाहर से हेलो, ओम शान्ति करता है पर अन्दर कुछ और है।

हरेक अपने आपसे पूछो कि मेरे अन्दर कुछ है क्या? दिल से पूछो, क्या है? दिल मेरी है, अपने दिल से हम पूछ सकते हैं कि मैं खुश हूँ? न खुश हूँ तो कारण? कारण कुछ भी नहीं है, सिर्फ न खुश रहने की आदत है। पुराना कोई संस्कार है तो दिल से खुश कैसे रहेंगे? पर सच्ची दिल है, साहब राजी है तो क्या होगा? भगवान भी कहे, सर्टिफिकेट देवे कि यह मेरा बच्चा सन्तुष्ट है, वरदान दे देवे, सदा सन्तुष्ट भव! जब साइलेन्स में डीप जायेंगे तो अपने अन्दर की सच्ची शान्ति को भंग नहीं करेंगे। नियम प्रमाण शान्त रहने का जो नियम है वो तोड़ेंगे नहीं। इसलिए शांत रहना है और शांत करना है।